❋ श्री गणेशाय नम : ❋

# ॥ अथ श्री ज्ञान माला प्रारम्भः ॥

राजा परीक्षित के पास एक दिन श्री व्यासजी के पुत्र श्री शुकदेवजी पधारे। राजा सिंहासन से उतर कर खड़े हुए और ऋषि के चरण कमलों में साष्टांग दण्डवत की। इसके उपरान्त बड़े आदर और सत्कार से उनको रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठाया तथा चरण कमलों को धोकर चरणोदक लिया। विधि पूर्वक स्नान कराया और विविध प्रकार के भोजन कराके घण्टानाद सहित आरती उतारी। राजा के मन की लगन देख श्री शुकदेवजी अति प्रसन्न हुए। फिर राजा परीक्षित ने दोनों हाथ जोड़कर विनती की कि हे कृपासिंधु ! हे दीन-दयालु ! आपकी कृपा से वेद-पुराण सुनने से मेरे हृदय में प्रकाश हुआ है और मन को अति आनन्द प्राप्त हुआ है, परन्तु अब मेरे मन में संदेह हुआ है कि संसार में ऊँचे तथा नीचे दो कर्म हैं। कृपा करके मेरे मन का संदेह निवारण कीजिये! राजा का यह

प्रश्न सुन श्री शुकदेवजी अति प्रसन्न हुए और बोले कि-हे राजन्! तुम्हारे प्रश्नों से संसार के मनुष्यों को बड़ा लाभ होगा और यह जो संदेह तुम्हारे मन में उपजा है वैसा ही अर्जुन के मन में भी उत्पन्न हुआ था। श्रीकृष्ण भगवान् ने अर्जुन के प्रश्नों का जो उत्तर दिया वही मैं कहता हूँ।

श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित से बोले कि हे राजन्! एक दिन प्रातःकाल भगवान् श्रीकृष्ण जी अर्जुन के निवास पर पधारे तो खबर मिली कि अर्जुन सोये हुए हैं। यह सुनकर श्रीकृष्णजी को आश्चर्य हुआ और दुख हुआ कि सूर्यनारायण के उदय होने के बाद भी अर्जुन सोये हुए हैं। उन्होंने अर्जुन को उसी समय स्वप्न दिया-अर्जुन जाग उठे। तभी सेवक ने अर्जुन से कहा कि स्वामी! भगवान् श्रीकृष्ण पधारे हैं। यह सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्ण के चरणों में गिरकर अपने अपराध के लिए क्षमा प्रार्थना की। भगवान् ने कहा कि हे अर्जुन! तू बड़ा बुद्धिमान और ज्ञानी है। इस समय तुझे स्वप्न अवस्था में देख मुझे बहुत सोच हुआ। मनुष्य देह

बहुत दुर्लभ है। मनुष्य देह बहुत कठिनता से प्राप्त होती है। इस देह को पाकर प्रातः समय सोना बुद्धिमानी की बात नहीं! भगवान् के ऐसे वचन सुन अर्जुन ने विनती करके प्रश्न किया हे दीनदयाल दीनबन्धु! जो अपराध सेवक से अनजाने में हो गया है उसे क्षमा करके अब आप इस दीन आज्ञाकारी से आज्ञा करो कि कौन से कर्मों का त्याग करना आवश्यक है। श्री कृष्ण ने उत्तर दिया कि हे मित्र! जो बात वेदों में गुप्त है और देवताओं ने भी नहीं जानी है वह मैं तेरे सम्मुख कहता हूँ। मन लगाकर सुन। इन बातों को तू अथवा अन्य कोई सुनकर या पढ़कर अंगीकार करेगा तो वह समस्त पाप बन्धनों से मुक्ति पावेगा। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं -

१- हे अर्जुन! जिस समय प्रातःकाल श्री सूर्यनारायण उदय हों उस समय मनुष्य का सोना अच्छा नहीं क्योंकि एक पहर रात्रि शेष रहने पर देवताओं का आगमन होता है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह दो चार घड़ी प्रातः उठकर परम दयालु परमेश्वर के ध्यान में मन लगा भजन में मग्न

रहे और अरुणोदय होते ही स्नानकर, श्री सूर्यनारायण को जल अर्पण करके दंडवत करे और पितृरों का जल देवे जिससे सूर्यनारायण तथा पितृदेवता बलवान होकर प्रसन्नता पूर्वक आशीर्वाद दें तो वह इस लोक और परलोक दोनों का सुख भोगेगा।

२-हे अर्जुन ! जो मनुष्य सूर्य के सम्मुख होकर दंड, धोबन और कुल्ला करे तो वह महापातकी होता है और अन्तकाल में नरक को जावे, क्योंकि सूर्य, अग्नि और जल, ये तीनों बड़े देवता हैं। जो मनुष्य उत्तम प्रीति की रीति से इनका पूजन करेगा उसको यज्ञ करने का फल मिलेगा। अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे घनश्याम ! इन देवताओं का पूजन किस विधि से प्रतिदिन करना चाहिये सो आप कृपा करके कहिये। तब श्रीकृष्णजी ने कहा कि विधि पूर्वक सूर्यनारायण का रविवार को व्रत धारण करे और न कर सके तो उस दिन नमक न खाये ! प्रातःकाल स्नान करके श्री सूर्यनारायण को ताँबे के पात्र से जल अर्पण करके विधि पूर्वक पूजन करें। प्रातःकाल स्नान करके अपने इष्टदेवता

का ध्यान और स्मरण कर शक्कर घृत तेल आदि सामग्री से अग्निदेव को पूजन करें। यदि इस भाँति नहीं कर सकें तो रसोई हो जाने पर रसोई की सामग्री से विधि सहित पूजन करें। प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन जल देवता को धूप चढ़ावे।

३-हे पार्थ ! जो कोई सायं काल घर के आँगन में झाड़ू देता है वह अवश्य दरिद्री होता है क्योंकि वह समय लक्ष्मी के घर में आगमन का है। वह जिसके हाथ में झाड़ू देखती हैं उसको शाप देकर चली जाती हैं।

४-हे अर्जुन ! पूर्व रात्रि के दीपक की बत्ती जलने से बचे तो उस बती को दूसरे दिन जलावे तो महापाप है। उस पाप से मनुष्य की स्त्री बहुत काल तक बन्ध्या रहेगी।

५-हे अर्जुन ! विधवा स्त्री के हाथ की रसोई खाना दोष है क्योंकि जिसका पति मर जाय वह अधजले मुर्दे के समान हो जाती है। इस कारण उस स्त्री के हाथ की रसोई खाना पाप है। अर्जुन ने श्रीकृष्णजी के मुखारबिन्द से यह शिक्षा सुन बहुत

पश्चाताप किया और चकित हुआ, फिर विनती की कि हे अनाथों के नाथ दयासिन्धु ! आपने जो शिक्षा दी उसके सुनने से दास के मन में अति आनन्द प्राप्त हुआ है। कृपा करके कुछ और शिक्षा दीजिये।

६-हे अर्जुन ! एक चारपाई या बिछौने पर अपनी स्त्री के सिवाय दूसरे अन्य स्त्री के संग सोना मनुष्य की भूल है, क्योंकि विवाहित स्त्री अर्धांगिनी होती है और वह समस्त पाप-पुण्य में संग रहती है। यह सुन के अर्जुन ने हाथ जोड़ कर प्रश्न किया कि हे भगवान् ! यदि कोई मेहमान अपने घर आवे, उसके पास बिछौना न हो तो क्या करना उचित है ? श्रीकृष्ण ने कहा कि उस मेहमान को उचित है कि अपना वस्त्र बिछौना पर बिछाकर उस पर सोवे फिर कुछ दोष न लगेगा।

७-हे अर्जुन ! जो मनुष्य एकादशी या त्रयोदशी या और कोई व्रत धारण करे और स्त्री के पास जाय तो व्रत का फल नहीं पावे। यह सुनकर अर्जुन ने प्रश्न किया कि-हे जगदीश्वर ! व्रत के दिन

यदि स्त्री त्रिदोष कर्म से निश्चित होकर स्नान करे और उसके पास न जाय तो महापातकी हो जाय तो व्रत निष्फल हो। ऐसे समय में दया करनी चाहिये ? श्रीकृष्णजी ने कहा कि अर्द्धरात्रि बीत जाय तो कुछ हर्ज नहीं क्योंकि रात्रि के पिछले पहर अगले दिन में गिने जाते हैं।

८-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने पितृ देवताओं का पूजन करे वह उनके आशीर्वाद से इस लोक में धन सन्तान और परलोक में वैकुण्ठ पाता है।

९-हे अर्जुन ! मनुष्य को चाहिये कि जलते दीपक को न बुझावे। कोई पुरुष दीपक से दीपक जोड़े वह पातकी होता है।

१०-हे अर्जुन ! व्रती मनुष्य चारपाई पर सोये तो व्रत निष्फल हो जाता है क्योंकि जिस देवता का व्रत धारण करे वह देवता व्रत के दिन मनुष्य की देह में वास करता है। इस लिये वह व्रत के दिन स्वच्छता से रहे और चारपाई पर न सोये। पृथ्वी पर सोये, स्त्री से अलग रहे, एक बार फलाहार करे, ब्राह्मणों को दान दे तो देवता प्रसन्न हो

आशीर्वाद देते हैं और व्रत फलदायक होता है।

११-हे अर्जुन ! व्रत के दिन किसी को अपना झूँठा न देना चाहिए क्योंकि जो झूँठा खायेगा सो व्रत के फल का भागी होगा, यह बड़ा दोष है।

१२-हे अर्जुन ! मनुष्य रसोई के मध्य में अर्थात् कुछ सामग्री बन गई हो तो जल्दी करके रसोई जीमने में लग जाय तब तक रसोई हो जाय अग्नि देव को भोग न लगाये तब तक किसी को रसोई में से अग्नि नहीं दे नहीं तो वह मनुष्य सदा दरिद्री रहेगा। इसलिए मनुष्य को ऐसा चाहिये कि जब रसोई की सामग्री तैयार हो जाय तब स्वच्छता से प्रथम आसन पर चौरस बैठ कर अग्नि मुख के द्वारा पूर्ण ब्रह्म परम दयालु परमेश्वर का भोग लगावे। फिर अन्नदेव को नमस्कार कर एक अभ्यागत को भोजन करावे और यदि सामग्री अधिक न हो तो थोड़ी-थोड़ी सब सामग्री अभ्यागत के निमित्त अर्पित करके भोजन करे। उस पुण्य के प्रताप से अन्नदेव प्रसन्न होंगे और अन्नदेव के आशीर्वाद से वह मनुष्य सदा सुखी रहेगा।

१३-हे अर्जुन ! जो मनुष्य ताँबे के पात्र को झूंठन से अशुद्ध करेगा तथा शौच स्थान में ले जाय तो अन्तकाल में नर्कवासी होता है क्योंकि सब धातुओं में ताँबा महा पवित्र है। इसलिए जो मनुष्य ताँवे के पात्र में जल भर के स्नान करे सो गंगाजल के समान फल पाता है और तिल, अन्न, जल, पुण्य करे तो महापुण्य है।

१४-हे अर्जुन ! जो आदमी स्त्री संग करके अपवित्र रहे तो इस पाप से अन्तकाल में नर्क को जाता है इसलिए उसका पाँव पृथ्वी पर धरना ऐसा है जैसे मित्रों के सिर पर पाँव रखना।

१५-हे अर्जुन ! जो मनुष्य ब्राह्मणी अथवा परनारी से मैथुन करे और उस वीर्य से कदाचित स्त्री के गर्भ रहे और पुत्र पैदा हो तो उस पापी प्राणी के पितृदेव जो अपने सुकर्म करने के कारण बैकुण्ठ धाम में भी हो तो बैकुण्ठ से नरक में वास करते हैं। व्रत-तर्पण श्रद्धा से विमुख यह सबसे भारी पाप है।

१६-हे पार्थ ! अमावस्या को वृक्ष की डाली या

पत्ते को तोड़ना ब्रह्महत्या के समान है और उस दिन दन्त धोवन करना भी अयोग्य है।

१७-हे अर्जुन ! जो कोई परदेशी या अभ्यागत कुछ याचना करे तो अपनी श्रद्धा के अनुसार उनको देवे विमुख न जाने देना महापुण्यात्मक है।

१८-हे पार्थ ! जो नर अपने घर में टूटी खाट और फूटे बर्तन रखते हैं वे दरिद्री होते हैं।

१९-हे पार्थ ! जो मनुष्य श्री नारायण का नाम लेकर खाया पिया करे और चलते-फिरते उठते-बैठते जो काम परमेश्वर का नाम लेकर करे तो महा सुकर्म फल से इस लोक में सुखों को भोग कर परम आनन्द पाता है। यह नियम महापुनीत है और जो मनुष्य चलते-फिरते डगर हाट में बार-बार मन में आवे सो लेकर खाया और परमेश्वर का नाम उच्चारण न करे वह पाप और विपत्ति के बंधन से कभी नहीं छूटता।

२०-हे अर्जुन ! किसी मनुष्य के संग एक पात्र में भोजन करना बड़ा दोष है क्योंकि न जाने पूर्व जन्म में यह मनुष्य कौन-सी दशा में था भोजन के

कारण उसके पूर्व जन्म की कृतियाँ अन्तःकरण में प्राप्त हो जायेगी इसलिए ऐसे नीच काम को न करना चाहिये।

२१-हे अर्जुन ! भोजन करने के समय अन्न देवता मुख में पधारते हैं इसलिये मौन धारण कर भोजन करना उचित है क्योंकि बोलने में मिथ्या वचन मुख से निकले तो अन्न देवता के प्रकोप से इसी जन्म में विपत्ति पड़े। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि एकचित होकर चौरस बैठ के दाहिने, बाँये देखे अन्नदेव की बढ़ाई करके भोजन करे तो इस कर्म से वह सदा सुखी रहे। अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगतगुरु ? भोजन करते समय कुछ कहना आवश्यक हो तो कैसे कहना चाहिये ? श्रीकृष्ण जी ने आज्ञा दी कि बोलना आवश्यक हो तो मन में अन्नदेव से प्रार्थना करके सच्चिदानन्द भगवान् का नाम ले कर पाँच ग्रास ले और आचमन करके बोले।

२२-हे अर्जुन ! मनुष्य अपनी विवाहित अर्द्धांगनी परम हितकारी स्त्री से गृह क्लेश करके किसी की

बुराई न करे और न खोटा वचन बोले। अपने मुख से उसकी बुराई कर खोटे वचन बोल कर मन को क्लेश व दुख पैदा करे तो इस संसार से वह सब क्लेश के बंधन में रहे और परलोक में नर्क वास करे क्योंकि जिस समय विवाहित स्त्री के गर्भ से पुत्र प्रकट होता है उस समय उसके पितृदेव कदाचित नीच कर्मो के फल से नर्कवासी हो तो वे पाप मोचन ऐसे पुत्र को पाकर परम प्रसन्नता से नीच कर्मो के भोग से मुक्ति पाकर बैकुण्ठ को सिधार कर बारम्बार आशीर्वाद दिया करते हैं इसलिए पुरुष को चाहिए कि अत्यन्त प्रेम से विवाहित स्त्री को रखे और स्त्री भी मन-क्रम-वचन से अपने पति के समान सुन्दर हितकारी किसी को न माने। विवाहिता स्त्री आपकी संगी है, इसलिए उनके पाप से पाप और पुण्य से पुण्य बढ़ता है। उससे अपराध हो जाये तो पुरुष को चाहिए कि उस पर क्रोध न करके सदा प्यार से शिक्षा देता रहे और मन को प्रसन्न रखे। शीलवन्ती स्त्री को चाहिये कि अपने पति को ईश्वर के समान जान कर प्रति दिन उसकी

सेवा में मन वचन से रहे और पतिव्रत धर्म का पालन करे। पति कैसा ही कठोर हृदय क्यों न हो उसको ईश्वर के समान समझे जैसे सुख में वैसे ही विपत्ति में। प्रसन्नता सहित पति की आज्ञा से मुख न मोड़े और दुःख सुख में जिस विधि परमेश्वर राखे रहे। अपने प्यारे पति की आज्ञा का उपाय करती रहे और अपनी श्रद्धा के अनुसार सुन्दर वस्त्र और आभूषणों से अपने अंगों को शोभित करके पति के मन को प्रसन्न रक्खे जिससे पुरुष का मन परनारियों पर न जाय और अपने धर्म में सावधान रहे। इस विधि से जो स्त्री-पुरुष आपस में प्यार प्रीति से रहेंगे, वह प्राणी इस लोक में सुख भोग कर अन्तकाल में बैकुण्ठ वासी होंगे।

२३-हे अर्जुन ! दीपक की, सूर्य की, ज्योति से खाटकी छाया पुरुष के ऊपर दोपहर को पड़े तो दोष होता है।

२४-हे अर्जुन ! जो मनुष्य किसी की दुष्टता अथवा किसी प्रकार से मारने का उपाय करे तो वह इस पाप से नरक वासी होता है।

२५- हे पार्थ ! रूखी रोटी बिना घृत भोजन करना वह मानो प्रेत के संग भोजन करना है। क्योंकि जिस रसोई में घृत बिना सामिग्री बने वहाँ प्रेत वास करते हैं और वह घर दरिद्री हो जाता है इसलिये पुरुष को उचित है कि रसोई श्रद्धा के अनुसार घी लगाकर करे। घी की गंध से प्रेत बाधक नहीं होता। दीपक जला के रसोई बनावे या कुछ और काम करे तो उसको दीपक श्राप देता है क्योंकि वह दोष है,

२६-हे पार्थ ! यदि मनुष्य प्रातः और सन्ध्या समय देहरी पर बैठे तो उसके घर से पुण्य-दान हटकर सम्पत्ति घटती है।

२७-हे अर्जुन ! जो मनुष्य प्रातःकाल कूड़े को बिना साफ किये घर लीपे तो उस अहंकारी धनवान् की सम्पति लक्ष्मीजी के श्राप से थोड़े समय में चली जाती है।

२८-हे पार्थ ! यदि पुरुष बाग-ताल और नदी किनारे दिशा मैदान जाय तो बहुत समय नरक भोगता है।

२९-हे पार्थ। जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न खाये तथा व्रत न करे तो उसका जीवन पशु के समान है अन्तकाल में पंचहत्या का भागी हो नरक में वास करता है। इसलिये मनुष्य को उचित है कि एकादशी को व्रत धारण कर दिन भर श्री दीनदयाल के ध्यान में रहे व रात्रि को जागरण करे इससे उसके पापों का नाश होता है, व पितृगण स्वर्ग को जाते हैं। यह सुनकर पार्थ ने प्रश्न किया कि हे दीनदयाल! यदि कोई मनुष्य व्रत के दिन अन्न खाय तो वह इस पाप से कैसे मुक्ति पावे ? भगवान श्रीकृष्ण बोले-त्याग व्रत धारण करे तो उसकों व्रत का पूर्ण फल प्राप्त हो। यदि कदाचित निर्जल न रह सके तो गाय दुग्ध के सिवाय कोई आहार न करे तो यज्ञ के समान फलदायक हो। एकादशी को अन्न खाना कीड़ों के समान है। जितने चावल खाये उतनी ही हत्या सिरचढ़े। यदि व्रत न रह सके तो भी एकादशी को चावल खाना दोष है, क्योंकि एकादशी को सारे पाप अन्न में बसते हैं। अर्जुन यह गुप्त वार्ता सुन महा शोक समुद्र में डूब गया तो

श्रीकृष्णजी ने उसकी शोक अवस्था में दुःखी जान अति दयालुता से उसके मनसे क्लेश मिटाकर आज्ञा दी कि हे अर्जुन ! आज तक जो तुमसे नीच कर्म बन आये है, उसके लिये यह गुप्त भेद प्रकट किया। मन लगाकर उसकों अंगीकार करो तो काम आवें। तब आज्ञा पा अर्जुन ने श्रीकृष्ण के चरणारविन्द में सिर नवा प्रसन्नता सहित दोनों हाथ जोड़ स्तुति की। हे मधुसूदन ! आपने जो संसार-सागर से पार उतारने की शिक्षा जिस मुखारबिन्द से मुझको दी है उसकी महिमा वर्णन करने की मेरी क्या शक्ति है, उसका तो शेष, दिनेश, वेदादिक भी पार नहीं पा सके हैं, सो हे नाथ ! मेरी रक्षा करो। अब कुछ और आज्ञा कीजिए तब श्री कृष्ण ने अर्जुन को अधिकारी जान आज्ञा की।

३०-हे अर्जुन ! जो मनुष्य रजस्वला स्त्री से मैथुन करे तो वह इस पाप के कारण संसार में रोगग्रस्त रहे तथा अन्तकाल नरक में जाकर हजार वर्ष से अधिक समय वहाँ वास करे। कारण यह है कि वह रजस्वला स्त्री पहले दिन हत्यारी, दूसरे दिन

चण्डालिनी और तीसरे दिन धोबिन के समान होती है। इन दिनों में उसके वस्त्र छूने और मुख देखने से पाप लगता है।

३१-हे अर्जुन! जो मनुष्य रजस्वला स्त्री के हाथ से लेकर कोई वस्तु भोजन करे तो अपनी अवस्था में जितने पुण्य तथा दान किये हों, सब नाश हों। अतः मनुष्य को चाहिये कि चौथे दिन स्नान की हुई स्त्री के पास जाय तथा चतुर्थ दिन भी संगम न करे तो एक मनुष्य के मारने की हत्या होती है। यह सुनकर अर्जुन ने विनती की कि-हे जगदीश! अन्तर्यामी स्त्री का पति यदि परंदेश में हो तो पाप से कैसे मुक्ति पावें? श्रीकृष्णजी ने कहा कि जो मनुष्य घर में न हो तो स्त्री को चाहिये कि स्नान करके सूर्य के सम्मुख स्थित हों अपने पति की सूरत मन की आरती में देख ले। इस प्रकार उसका पति इस पाप से मुक्ति पावे।

३२-हे अर्जुन! जो मनुष्य किसी की खोई वस्तु पा जाये या कोई भाँति लेवे, भूल अथवा घमण्ड के कारण न दें तो महापाप लगे। दूसरे जन्म में

देना पड़े वह मनुष्य उससे परलोक में लेवे। इसलिए मनुष्य को उचित है कि जो मुख से कहे उसको पूरा करे।

३३-हे पार्थ! जिस मनुष्य से कोई जीव किसी पदार्थ का भोजन माँगे, वह उस जीव को विमुख रखे तो इस दोष के कारण वह मनुष्य इस जन्म में सदा दुखी व दरिद्री रहे। फिर मृत्यु समय जीव उसी पदार्थ में जाकर प्राप्त हो। यह सुनकर अर्जुन ने प्रश्न किया-हे नाथ! निर्धन मनुष्य जीव को प्रसन्न कैसे कर सकता है? श्री भगवान् बोले कि निर्धन मनुष्य प्रसन्नता से रविवार को उत्तम नक्षत्र में व अमावस्या के दिन श्रद्धानुसार इच्छित पदार्थ का भोजन करे तो परमेश्वर उसकी मनोकामना पूर्ण करे।

३४-हे पार्थ! जो पुरुष कुछ धन लेके बेटी का ब्याह करे तो इस पाप के फल से वह सदा दरिद्री रहे उसके पितृगण पुण्यकर्मों से विमुख हो नर्क में जायें।

३५-हे पार्थ! कोई पुरुष किसी से कुछ माँगे

न और दे देवे तो दान का फल अश्वमेघ यज्ञ के समान है, क्योंकि जीव की प्रसन्नता परमेश्वर की प्रसन्नता का कारण हैं।

३६-हे पार्थ ! मनुष्य को चाहिए कि किसी से कुछ न माँगे परम दयालु परमेश्वर ने जो दिया है उसमें संतोष करे।

३७-हे पार्थ ! पुरुष कामना के लिये चारपाई चौकी पर बैठकर परमब्रह्म भगवान का पूजन करे तो फलदायक नहीं होता इसलिये मनुष्य को उचित है कि खूब पवित्रस्थान में ऊनी वस्त्र मृगछाला व कुशासन पर स्त्री सहित बैठे पूरब या उत्तर की ओर मुख करके त्रिलोकीनाथ के पूजन ध्यान और स्मरण में मन लगावें तो फल दायक होता हैं।

३८-हे अर्जुन ! जो पुरुष गंगाजी अथवा तीर्थ स्थान पर मूर्ति के दर्शनों को जाकर पराई स्त्री पर कुदृष्टि डाले तो वह इस पाप से कभी नहीं छूटे और अन्तकाल में यमके दूत उस पापी को नरक में ले जाकर पतली सींक उसकी देह में घुसा कर अनेक प्रकार के दु:ख दें। यह सुनकर अर्जुन ने

श्रीकृष्ण भगवान की स्तुति करके कुछ विनती की कि हे वासुदेव मधुसूदन आप कृपा करके कुछ कहो जिससे सब अज्ञान दूर हो और हृदय स्वच्छ हो जाय।

३९-हे अर्जुन! जो मनुष्य श्री गंगाजी स्नान करते समय जूता पहिन कर जाय तो श्रीगंगाजी के स्नान का फल उस मनुष्य को नहीं मिलता है।

४०-हे पार्थ! जो पुरुष चार पुरुषों में बैठ कर कुछ वस्तु मांग अकेले भोजन करे इस पाप से मुक्ति न पावे।

४१-हे पार्थ! द्वादशी को रविवार, द्वादशी, अमावस्या को व्रत रखकर खिचड़ी खाय तो सन्तान न होवे।

४२-हे पार्थ! द्वादशी को पुराण श्रवण और पाठ अयोग्य है, क्योंकि उस दिन व्यासजी दिन भर परमेश्वर के पूजन ध्यान में मन को स्थिर कर बैठते हैं। यदि कोई पुराण बाँचे तो उनका मन ध्यानावस्था में पुराण की ओर चलायमान होता है।

४३-हे पार्थ! व्रत के दिन और आदित्यवार

को दर्पण में मुख देखना अयोग्य है। केवल तिलक लगाने के लिए देखे क्योंकि तिलक नारायण का रूप है।

४४-हे अर्जुन ! जिस चारपाई पर पुरुष विवाहिता स्त्री के संग सोवे उस पर उसका भाई बैठे या किसी को उसे देवे तो महादोष है।

४५-हे पार्थ ! कोई मनुष्य किसी से तिल लेके भोजन करे तो बड़ा दोष है। यह सुनकर अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे दीनदयाल ! कदाचित कोई हितकर तिल खिला देवे तो किस रीति से दोष निवृति हो। श्रीकृष्णजी ने कहा कि प्रथम तो भोजन न करे यदि करे भी तो उसके बदले उसको खिलावे नहीं किसी ब्राह्मण को दान देवे क्योंकि तिल का दान देने से बड़ा फल है।

४६-हे पार्थ ! जो नर नंगा होकर जल में स्नान करे वह अपवित्र रहे और सुकरम निष्फल जायें।

४७-हे अर्जुन ! जो प्राणी मन को रोक कर एकचित हो प्रीति भाव से कथा श्रवण करते हैं सो वे बैकुण्ठ में नाना प्रकार का सुख पाते हैं।

४८-हे पार्थ ! जो कोई किसी की धरोहर धरी हुई वस्तु को अपने अधिकार में कर मुकर जाये तो अन्तकाल में नरक में जाकर दुख भोगे और उसकी स्त्री बाँझ होवे।

४९-हे अर्जुन ! जिस समय कर्जदार के घर लेनदार आकर अपने रुपये का तकाजा करे और क्रोधवश सौगन्ध खा के द्वार पर से चला जाय। उस समय कर्जदार यदि अन्न जल करे तो यह महादोष है। वह मनुष्य जन्म भर दरिद्री और विपत्ति में रहे।

५०-हे पार्थ ! मनुष्य अपनी विवाहित स्त्री को त्याग करके और बाजार की स्त्रियों से मैथुन करे या मैथुन के समय गौ को भगावे तो इस पाप से नरक में जाय और उसकी सन्तान बिना औलाद हो।

५१-हे पार्थ ! जो अपने मनुष्य अपने कुटुम्ब या नातेदार की बुराई करे तो इस पाप के कारण पुत्र का मुँह न देखे।

५२-हे पार्थ ! जो पुरुष अपने मुँह से अपनी

स्तुति करे और अन्य मनुष्य से अपनी स्तुति सुनकर प्रसन्न हों तो अंत में दुःख पाये।

५३-हे पार्थ ! जो बाग के वृक्षों को काटे या ताल तलैया को पाटे और कोई मना करे तो ध्यान न देवे तो वह इस पाप से नरक में जाय और मुक्ति न पावे।

५४-हे पार्थ ! जो मनुष्य बैल या घोड़े को बधिया करे तो संतान सुख न देखे तथा अगले जन्म में हिजड़ा हो और बड़ों के सुकृत से आप हिजड़ा न हो तो उसके पुत्र नपुंसक हो, दरिद्र हों। इसके समान पाप नहीं है।

५५-हे पार्थ ! रुपये के बदले किसी की धरती अपने कब्जे में लावे तो इस पाप के कारण अन्धा हो और संतान सुख न पावे या पुत्र जवान होकर मर जाय।

५६-हे पार्थ ! पिता बड़े भाई और जो आयु में बड़े हो उन्हें खोटा वचन बोले तो महा पाप है।

५७-हे पार्थ ! कोई नर चरती गाय को जंगल से भगावें तो मुक्ति न पावे और निपुत्र रहे।

५८-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने स्वामी और पिता के संग युद्ध को जाय और कायरता से उन्हें छोड़ कर भागे उस पाप से सब उसका शरीर गल जाय।

५९-हे पार्थ ! जिस पुरुष ने अवस्था भर गंगाजी या किसी तीर्थ में स्नान नहीं किया तो उस मनुष्य का जीवन इस संसार में पशु के समान है, इसलिए मनुष्य को आवश्यक है कि स्त्री सहित तीर्थ स्नान करके जो हो सके वह पुण्य करे, सौ अश्वमेध यज्ञ का फल पावे और उसके पुत्र सदा सुखी रहें। यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे जगदीश ! जिसकी नातेदारी की लज्जा व धन की कमी से तीर्थ में स्त्री सहित स्नान प्राप्त न हो सके तो उसका क्या कर्तव्य है ? श्रीकृष्णजी बोले- जब पूर्णमासी या संक्रान्ति या पुण्य व्यतोपात सिद्ध योग हो तब अमावस्या के दिन नदी या तालाब पर कुँए, हौंद, घर में स्नान करके जो कुछ श्रद्धा हो सो पुण्य करे। यज्ञ के समान फल दायक हो, पिछले पापों से मुक्ति पा कर बैकुण्ठ जावे। हे पार्थ ! यह वार्ता गुप्त है।

चारों वेदों में जो इसका फल कहा है सो मैंने तेरे आगे कहा है।

६०-हे पार्थ ! मनुष्य को उचित है कि किसी का पर्दा न उघारे यह दोष है।

६१-हे अर्जुन ! जो मनुष्य ब्याही हुई गऊ के बछड़े को न्यारा करके गौ को दुहे और उसे पिलावे नहीं तो वह बहुत काल निपुत्र रहे।

६२-हे अर्जुन ! जो घर वालों को घायल कर घर पर कब्जा करे तो उसकी स्त्री बाँझ और कुकर्मी होवे जन्मभर दरिद्री निपुत्री रहे। यदि पुत्री जीवे तो विधवा हो। पानी देने वाला कुल में न रहे अन्धा व महादुखी रहे।

६३-हे अर्जुन ! जो मनुष्य चन्द्र व सूर्य, ग्रहण में अन्न जल करे शौच करे व पानी भरे तो महादोष है। वह चन्द्रमा और सूर्य के श्राप से धन सन्तान का सुख नहीं पाता और नर्क में जाता है।

६४-हे अर्जुन ! जो मनुष्य दिशा मैदान जाकर बचे हुए जल से हाथ-पाँव धोवे तो महादोष है। उसके कुनबे के मनुष्यों को प्रेत दुःखी करते हैं,

क्योंकि वह जल प्रेत भोग का है। भूलकर भी ऐसा न करना चाहिए।

६५-हे अर्जुन ! जिस आदमी के सन्तान नहीं, उनका जीवन संसार में तुच्छ है। यह सुन कर पार्थ ने प्रश्न किया कि स्वामी पुत्रहीन आदमी को किसके हाथ का तर्पण पहुँचेगा। श्रीकृष्ण बोले निपुत्री पुरुष की स्त्री सुखी और प्रीति भाव से मन कों शुद्ध करके तर्पण करे तो उसके पति को सुख पहुँचे और कदाचित अपने पापों के वश नरक भोगता होवे तो मुक्ति पावे।

६६-हे अर्जुन ! द्वादशी, अमावस्या और रविवार के दिन शरीर पर तेल मलना महादोष है।

६७-हे पार्थ ! गृहस्थी को, घर में पीपल, इमली आदि वृक्ष नहीं रखना चाहिए क्योंकि प्रति दिन एक बार पितृ देवता अपने घर में आते हैं सो ब्राह्मण को मिठाई खाते देखें तो प्रसन्न हो आशीर्वाद देवें और वृक्ष में देव भूतादिक वास देख उनसे डरकर वह घर में नहीं आते श्राप दे जाते हैं, सो वह व्यक्ति निर्धन होकर सदा दुखी रहता है, इसलिए

घर में वृक्ष रखना, अंडी के तेल से दीपक पीपल के नीच जलाना खराब तथा पाप है।

६८-हे पार्थ ! मनुष्य देह बड़ी कठिनाई व बड़े जप-तप के फल से प्राप्त होती है, यह देह पाकर अहंकार की फाँसी गले में डालना वर्जित है। देखो सिर के बाल तो सदा मौत के हाथ में रहते हैं न जाने किस समय जीव शरीर से न्यारा हो जाय इस पर भी यदि व्यक्ति कहे कि अभी लड़के हैं, जवानी तथा बुढ़ापे में भजन किया जायेगा यह भूल है। क्षण भर भी इस देह का झूँठा भरोसा न करे। पुरुष को उचित है कि क्रोध, लोभ, अहंकार तथा बुराई में पृथक रहे, ईश्वर ने जो कुछ दिया है उसमें सन्तोष रक्खे हर्ष में, हानि, लाभ भले-बुरे को समान जाने, सब जीवों में पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर को समान जाने व देखे सच्चिदानन्द नारायण के ध्यान में स्मरण रहे। खोटे समय में माता-पिता व भाई सहायक नहीं होते केवल सतर्क हो सहायक होते हैं।

६९-हे पार्थ ! जिस व्यक्ति ने पीपल को प्रतिदिन

जल नहीं चढ़ाया व महादेव का व्रत-पूजन नहीं किया वह मनुष्य पशु के समान है। वह सदा निर्धन और दुखी रहे। यह सुन पार्थ ने प्रश्न किया है कि हे वासुदेव! किसी को नित्य पूजन नहीं प्राप्त हो सके तो क्या करे? श्रीकृष्णजी ने कहा शनिवार को वृक्षराज पीपल की जड़-तनों में विष्णु शाखा में महादेव और सब तीर्थों में पीपल का पूजन करना उत्तम है। जो आदमी हर शनिवार को नियम करके पीपल का पूजन श्रद्धा भक्ति से करे और उसी पीपल के नीचे किसी ब्राह्मण को भोजन कराके आप भी भोजन करे तो पुण्य से देवता का आशीर्वाद पावे उसकी स्त्री इस रीति से महादेव की प्रीति सहित पूजन करे तो पुण्य हो जो लिखने में नहीं आता, यह वार्ता सुनके अति प्रसन्नता से हाथ जोड़ पार्थ बोले कि हे महाराज! इसके सुनने से बड़ा आनन्द मिलता है। श्रीकृष्णजी ने कहा हे अर्जुन! यह पुनीत वार्ता वेदों का सार तेरे आगे कहा अब और कहता हूँ, चित्त लगाकर सुनो। हे पार्थ जो मनुष्य स्नान करके गूलर महुआ के पेड़

तले जाय तो चौथाई फल वृक्ष को मिले यह सुन करके अर्जुन ने यह प्रश्न पूछा। श्रीकृष्ण ने कहा नरसिंह अवतार ने हिरण्यकश्यप दैत्य के पेट को नखों से फाड़ डाला था, तब नरसिंह के नखों में ज्वाला उठी वहाँ महुओं व गूलरों के वृक्ष ही दृष्टि पड़े। दोनों पंजे वृक्ष में लगाने से नाखूनों की ज्वाला मिट गई। उस समय नरसिंह ने कृपा दृष्टि सहित उनको आज्ञा दी कि जो स्नान करके तेरे नीचे आवे उसके स्नान का चौथाई फल इन वृक्ष को मिले। अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे स्वामी जो आदमी भूल से उसके नीचे चला जावे तो कैसे फल पावे। श्रीकृष्णजी ने कहा कि तीन बार नरसिंहजी का नाम लेवे तो वृक्ष को फल न पहुँचे।

७०-हे अर्जुन ! स्नान करके चारपाई पर बैठने से तथा बाहर जाकर किसी से मिलनी कर से स्नान का फल जाता रहता है। स्नान करके कुछ खाके जहाँ चाहे वहाँ जायें कुछ दोष नहीं लगता।

७१-हे अर्जुन ! आम के वृक्ष तथा बाग के वृक्ष काटने से ब्रह्म हत्या के समान पाप है, व बाग

लगाने का पुण्य हजार यज्ञ के समान है, इसलिए उचित है कि सम्पूर्ण बाग लगाने की सामर्थ न हो तो सिर्फ मेवा के पाँच वृक्ष एक ठौर में लगा जीवन सफल करें क्योंकि वृक्ष लगाने का पुण्य अश्वमेद्य यज्ञ के समान है। जब पानी बरसता है तो उस वृक्ष के पत्तों से जल की बूंदें पृथ्वी पर टपकती हैं उसका पुण्य होता है। जैसे स्त्री को अपनी पति की सेवा का पुण्य फलदायक है उसी तरह उस पुण्य की महिमा लिखने में नहीं आती जो लगावे उसके पाँच पीढ़ी के प्राणी बैकुण्ठ में वास पावें।

७२-हे पार्थ! जो आदमी तुलसी का पौधा अपने घर में रखे और प्रतिदिन स्नान करके उसे जल से सींच चन्दन अक्षय पुष्प से पूजन करे रात में दीपक जलावे तो उसके घर में भूत नहीं आते। लक्ष्मी का प्रकाश रहता है और यह अश्वमेघ यज्ञ के समान फलदायक है जो कदाचित् नित्य नहीं तो कार्तिक व अगहन में प्रतिदिन पूजन करे व आवले के वृक्ष के नीचे जाकर ब्राह्मण भोजन करावे तो उसे अश्वमेघ यज्ञ के समान फल हो परन्तु

आदित्यवार को ऑवला न पूजे।

७३-हे अर्जुन ! जिसके घर में बाँस हो उसको संसार में नर्क है, उसकी स्त्री के हाथ का जलपान करना भी महादोष है। इस पाप से न मुक्ति होती और उसके मुख से दुर्गन्ध आती है। यह सुन अर्जुन ने प्रश्न किया कि जो ऐसी स्त्री अपने कुटुम्ब या नाते में हो और कुछ खिलावे तो पाप से कैसे मुक्ति हो। श्री कृष्णजी ने कहा-वह प्रार्थना करे कि भोजन अनन्त शक्ति पारब्रह्म का नाम लेके प्रार्थना करे और भोजन करे तो दोष नहीं है।

७४-हे अर्जुन ! जो मनुष्य पानी का लोटा या घण्टी किसी दूसरे से लेकर पानी पीये तो दोष है। उसके हाथ से घण्टी पृथ्वी पर धरके पानी पीये तो दोष नहीं है।

७५-हे अर्जुन ! जो मनुष्य जिस पात्र में भोजन करे उसको माँजे नहीं और बची हुई झूँठन को उसी पात्र में रखे तो महादोष है। अन्न के श्राप से वह मनुष्य सदा दरिद्री और दुखी रहे।

७६-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने घर आंगन को

प्रति-दिन झाड़ू बुहारे से साफ नहीं रखते वे इस महादोष के कारण पितृ देवता के श्राप से छैः महीने में निर्धन हो जाते हैं।

७७-हे अर्जुन ! नदी और कुँआ छोड़ घर में गर्म जल से स्नान कराना सफल नहीं होता। यह सुन पार्थ ने प्रश्न किया कि नदी तालाब कुँआ न मिले तो कहाँ स्नान उचित है, श्रीकृष्णजी ने कहा कि गर्म जल में हाथ न डाले तो गंगा जल के समान होवे हाथ डाले तो मद के समान। हे पार्थ ईश्वर का मन में ध्यान धरना बड़ा कठिन है परन्तु जो कोई भगवान के भक्त बुद्धिमान हैं। वही मन को शुद्ध करके ध्यान करते हैं। यह सुन अर्जुन ने बड़ा सोच किया और भगवान् के चरण कमल में विनती की कि हे सच्चिदानन्द वासुदेव, ये बात कुछ तो अमल में आई हैं कुछ नहीं तो में कैसे अन्त समय पर मुक्ति पाऊँगा। श्री कृष्ण ने अर्जुन को शोक समुद्र में डूबा देख अति दयालुता से ढाढ़स देकर आज्ञा दी कि सोच मत कर धीरज धरकर ध्यान कर, इन बातों से पाप कटकर उद्धार होगा।

७८-हे पार्थ ! जो मनुष्य स्नान करके तिलक नहीं लगाते उनका स्नान करना पशु के समान है। कदाचित ब्राह्मण तिलक न करे तो उसका दण्डवत् करना अयोग्य है और बिना तिलक लगाये ब्राह्मण का माथा देखना बड़ा दोष है तिकलधारी को देखकर यमदूत डरते हैं।

७९-हे पार्थ ! जो मनुष्य अपने मन को संकल्प विकल्प कर निश-दिन शोक समुद्र में डूबा रहे। सुख को स्वप्न में भी नहीं देखे मनुष्य को उचित है कि होतव्यता पर दृष्टि करके सुख-दुख समान जाने और ईश्वर के स्मरण भजन में सदा प्रसन्न रहे।

८०-हे पार्थ ! मनुष्य देह बहुत कठिनता से प्राप्त होती है कदाचित दही का भोजन प्रति दिन प्राप्त नहीं हो तो पूर्णमासी को अवश्य दही का भोजन करना चाहिए, यह महापुण्य एवं सुख देने वाला है।

८१- हे पार्थ ! जो पुरुष मसूर, बैंगन खाता है उसको नर्क में भी ठौर नहीं मिलता क्योंकि इनके बोज पेट में २१ दिन तक रहते हैं २२ वें दिन मृत्यु

हो जाय तो नर्क में वास मिले यह सुनकर पार्थ ने प्रश्न किया-हे त्रिलोकी नाथ ! किसी ने इसमें से एक खाई और फिर मृत्यु आ पहुँची तो यह पाप कैसे नष्ट हो। श्रीकृष्ण ने कहा-गंगा जल पिलादे तो वस्तु को दोष घट से निकल जाता है वह दोष निवृत हो जाता है।

८२-हे पार्थ ! पुरुष अपने घर में एक दीपक आठों पहर जलायें रक्खे किसी समय बुझने न पावे तो पितृदेव अति प्रसन्नता से आशीर्वाद देते हैं व अगले जन्म में भगवान की कृपा से वह संतान सुख पाकर अंत समय बैकुण्ठ धाम पाता है।

८३-हे पार्थ ! जो मनुष्य भोजन करके बची झूंठन को दूसरी बार खाये अथवा किसी को खिलाये तो इस महापाप से अवश्य दरिद्री होता है।

८४-हे पार्थ ! जो मनुष्य रात्री को अँधेरे में भोजन करे अथवा भोजन करते समय दीपक बुझ जाय और भोजन किया जाय तो वह इस दोष के कारण धन व सन्तान का सुख न देखे क्योंकि ऐसे समय का भोजन प्रेत के संग भोजन करने के समान

है।

८५-हे पार्थ ! पुरुष अपने सिर की बँधी हुई पाग किसी को दे दे तो बड़ा दोष है क्योंकि उसकी बुद्धि घट जायेगी तथा लेने वाले की बुद्धि बढ़ती है।

८६-हे पार्थ ! दक्षिण दिशा की ओर पाँव करके सोना बड़ा अशुभ है।

८७-हे अर्जुन ! आठ वर्ष की लड़की गौरी, नौ वर्ष की रोहिणी एवं दस वर्ष की कन्या होती है। इन अवस्थाओं में विवाह करे तो यज्ञ के समान फल होता है। यदि १४ वर्ष से अधिक आयु होने पर विवाह करे तो महादोष है।

८८-हे पार्थ ! जो पुरुष सिर से अंगोछा बांधे और निर्वस्त्र रहे तो उसके सब पुण्य नष्ट हो जाते हैं। उसके पितृदेव नर्कवासी होते हैं। क्योंकि उसका धरती पर पांव धरना ऐसा है कि जैसे पृथ्वी पर गौ डालकर उस पर पांव धरना।

८९-हे पार्थ ! बासी जल से तर्पण करना लोहू के समान है। इस पाप के कारण नरक में जाके

लोहू के भरे हुए कुन्ड में वास करना पड़ता है।

९०-हे पार्थ! हाथ और गले में सोना पहनना उत्तम है क्योंकि स्नान करने के समय जो जल सोने से लगकर शरीर पर पड़ता है सो गंगाजल के समान होता है। इससे शरीर को सुख मिलता है।

९१-हे अर्जुन! गंगा आदि तीर्थों में स्नान से पहले कपड़े धोना महापाप है।

९२-हे अर्जुन! कुटुम्ब में से कोई मनुष्य तीर्थ को जाय तो उसको चाहिए कि प्रथम स्नान करे तो तर्पण का फल प्राप्त होता है।

९३-हे अर्जुन! जो बीमार गंगाजी या और तीर्थों में मृत्यु हो तो उस मनुष्य का अन्तिम संस्कार करते समय उसकी भस्म करके ७ दिन भस्म की चौकसी करे, गौ के सिवाय कुत्ता और बिल्ली आदि चौपाये और स्त्री की परछाँयी भस्म पर न पड़ने देवे फिर आठवें दिन स्नान करके भस्म क्षेत्र पधरावे और क्षेत्र को मृतिका से युद्ध करे तो जगत् के सब तीर्थों के स्नान और बड़े-बड़े यज्ञों का फल पाता है वह मृतक बैकुण्ठ में जाकर दाहक को जाकर

आशीर्वाद देता है।

९४-हे अर्जुन ! वर्षा के समय सूर्य उदय हो तो उस समय का स्नान गंगा स्नान के समान है जो देवताओं को भी प्राप्त नहीं होता।

९५-हे अर्जुन ! सूर्यास्त के समय भोजन करना या जल पीना महादोष है क्योंकि उस समय सूर्य और दैत्यों में युद्ध होता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि संध्या समय त्रिलोकीनाथ का ध्यान स्मरण करने के सिवाय और काम न करे और जो सूर्य को जल अर्पण न करे तो बहुत दिन निर्धन और दुःखित रहे। इस पर भी ध्यान करना चाहिए, मध्याह्न समय, चार घड़ी रात को व प्रातः समय इस तरह सोना, यह अशुभ है जो उन दोनों समय परमेश्वर के ध्यान स्मरण में मन लगावे और पुराण का पाठ करे तो समस्त पापों से मुक्ति पाकर सुख में वास करे व सन्तान हो।

९६-हे अर्जुन ! मनुष्य हाथ पर रोटी धरके खावे तो थोड़े ही समय में दरिद्री हो जाता है।

९७-हे अर्जुन ! जो मनुष्य धन और सन्तान को

देखकर रिसाय तो वह इस लोक में निर्धन हो और परलोक में नरक वास पाकर अगले जन्म में निपुत्री होवे।

९८-हे अर्जुन ! जिस मनुष्य के लड़के न हों तो संसार में सुख न पाकर अन्त में नर्क वासी होता है, दूसरे जन्म में निपुत्र रहे।

९९-हे अर्जुन ! जिस स्त्री के बालक पैदा हो उसके हाथ का ४५ दिन अन्न जल न खाये, खाय तो उसके पितृदेव अधोगति को जाये। यह सुनकर अर्जुन ने प्रश्न किया-हे भगवन् ! जो मनुष्य निर्धन तथा अकेला हो तो किस प्रकार इस दोष से बचे ? श्रीकृष्ण बोले १२ दिन पीछे गंगाजल में स्नान करे और जो सामर्थ हो वह पुण्यदान करे तो दोष नहीं होगा ! यह शिक्षा सुनकर अर्जुन बोले कि हे वासुदेव नन्दन ! कृपा करके कुछ और शिक्षा दीजिए।

१००-हे पार्थ ! चित्त से कुछ दान पुण्य करे तो अधिक फल पाता है यदि क्रोध करे, दान लेने वालों को दुःखी करे तो पुण्य निष्फल होकर पातकी होता है।

१०१-हे अर्जुन ! यदि मनुष्य अपने बेटे को किसी को गोद देवे व कदाचित दिये पुत्र को फेर लेवे तो पुत्र जवान होकर मर जाता है या पहले जन्म में धन, सन्तान का सुख नहीं पाता और नरकवासी होता है। यह सुन पार्थ ने प्रश्न किया कि है जगदीश कोई अज्ञान वश मनुष्य को दिये पुत्र को फेर लेवे तो इस पाप से कैसे मुक्ति पावे। श्रीकृष्णजी ने कहा कि वह मनुष्य अपनी स्त्री वह पुत्र सहित गंगाजी में स्नान करके पीली लाल धूमरो गाय दूध देने वाली ब्राह्मण को दान करे व परमेश्वर को दंडवत कर कसूर क्षमा करावे। इन पापों से मुक्ति पावे व अपने पुत्र के हाथ का दिया खावे।

१०२-हे अर्जुन ! यदि मनुष्य युद्ध करते २ असमर्थ होकर दूसरे की शरण आवे उसी समय कदाचित यह मनुष्य शरणागत आये को मारे तथा घायल करे तो इस पाप से उसके पुत्र जवान होकर निर्धन हो और स्त्री बांझ हो।

१०३-हे अर्जुन ! जो मनुष्य कागज व लकड़ी पर मनुष्य व स्त्री का नग्न चित्र बनावे तो इस पाप

द्वारा इस लोक व परलोक में सन्तान सुख नहीं देखे व आँखों से अन्धा होवे।

१०४-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने स्वामी की आज्ञा सुनकर ध्यान नहीं धरता सो महादुखी हो नरक में जाये क्योंकि स्वामी की अवज्ञा करना महापाप हैं। यह सुन कर अर्जुन ने प्रश्न किया-हे यदुनाथ ! कदाचित स्वामी ऐसी चाकरी फरमावे जो सेवक से नहीं हो सके तो कैसे पाप से मुक्ति पावे। श्रीकृष्ण ने कहा कि ऐसी कठिन चाकरी सेवक से न बन पड़े तो जिस दिन स्वामी दूसरी बार किसी काम की आज्ञा देवे तब तक सेवक उस काम को मन लगाकर न करे तो उतने दिन का वेतन स्वामी से न लेवे तो दोष दूर हो। कदाचित उतने दिन को वेतन लेवे तो वह धन का सुख नहीं पाता, अन्त काल यम के दूत उसको बड़ा दुःख देकर उतना वेतन उल्टा वसूल कर लेते हैं। यह सुन कर पार्थ ने पूछा कि हे स्वामी ! सेवक निर्धन होवे वेतन फेर देने की सामर्थ्य न हो तो कैसे इस दोष से मुक्ति पावे ? श्रीकृष्णजी ने कहा तब चौथाई

पुण्य करके परम दयालु परमेश्वर से अपना अपराध क्षमा करावे तो इस दोष से मुक्ति पावे सदा सुखी रहे।

१०५-हे अर्जुन ! जो पुरुष हवेली तालाब कुँआ आदि कोई घर बनावे व अधबना घर भीत या धरती पर बैठकर भोजन करे तो महादोष है। इसलिए पुरुष को उचित है कि जब सम्पूर्ण मकान बन चुके तब स्त्री सहित उसकी प्रतिष्ठा करके परिक्रमा करे। ब्राह्मण को भोजन करवा गोदान करे तो अश्वमेघ यज्ञ के समान फल हो तथा सुख पावे।

१०६-हे पार्थ ! यदि पुरुष तीर्थ यात्रा को जावे रास्ते में किसी के यहाँ मेहमानी खाये तो महादोष है, जन्म भर संसार के पदार्थ से विमुख रहे व यात्रा निष्फल जाये क्योंकि यात्रा का फल खिलाने वाले को प्राप्त होता है। यह सुन के पार्थ ने प्रश्न किया कि हे जगत् गुरु ! रास्ते में कोई भाई या नातेदार मिले और मेहमानी करे तो दोष किस प्रकार दूर हो, श्रीकृष्ण ने कहा-जाति बिरिया किसी का न खाये। आती बिरियाँ मेहमानी का खायं तो दोष

नहीं।

१०७-हे अर्जुन ! जो मनुष्य पक्षियों के घोंसले से छोटे-छोटे बच्चों को बाहर निकाले तो इस जन्म में दरिद्री होय और उसके पुत्र जवान होकर मरे और अन्त काल नर्क में जाये फिर अगले जन्म में धन संतान का सुख न पावे।

१०८-हे अर्जुन ! जो स्त्री या पुरुष रोते हुए बालक को मारे तो नरक में जाये और सब पदार्थों से विमुख होकर निपुत्र रहे कदाचित पुत्र होंयें तो मर जाये इस कारण से पितृदेव बैकुण्ठ से नरक में जाँये।

१०९-हे अर्जुन ! वृक्ष का कच्चा फल तोड़ना महादोष है। फल पक जाय तो कोई दोष नहीं है।

११०-हे अर्जुन ! जो मनुष्य मुँह धोये बिना पान या दूध आदि खाये-पिये और स्वामी की वस्तु को मोल दिये बिना ले जाये तो इस जन्म में महा दुःख मिले।

१११-हे अर्जुन ! जो मनुष्य चाकरी की तलब और नेगिन को नेग नहीं दे तो इस लोक में भलाई

नहीं पावे और इस पाप से जन्म भर दु:खों और निपुत्र रहे, अंतकाल नर्क में जावे कदाचित पितृ स्वर्गवासी होये तो नरक में बसें।

११२-हे अर्जुन ! जो मनुष्य दान की वस्तु को पात्र में लेकर और पात्र को हाथ में रखकर संकल्प करे और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन बोलदे तो हाथ और पात्र संकल्प में आजाये। अत: वह पात्र भी दे देना चाहिए और हाथ के बदले में जब तक सुवर्ण चाँदी या तांबे का बनवा कर ब्राह्मण को नहीं दे तब तक जो खाना पीना या सुकर्म हाथ से करे सो फलदायक नहीं होगा। पार्थ ने प्रश्न किया कि हे-यदुनाथ ! जिसको हाथ और पात्र देने की सामर्थ न हो किस प्रकार इस पाप से मुक्ति पावे। श्रीकृष्ण ने कहा कि मनुष्य को चाहिए जो अपढ़ और भूखे ब्राह्मण को जो श्रद्धा हो तो दूर ही से दे दे और पुण्य दान का संकल्प करे ! यदि ऐसा ना करे तो महादोष है।

११३-दो०-जिस नर की नारी मरे, करै दूसरौ ब्याह।
ना देखे संसार में, सुख सम्पति सुख चाह॥

यह सुन अर्जुन ने कहा, हे घनश्याम सुजान।
इसका कारण कौन है, कहिए सुख की खान॥
कहा कृष्ण ने हे हितू, ध्यान धरौ मन माहिं।
ब्याह करें सुतहीन नर, तो कुछ दूषित नाहिं॥
जिस नर के पुत्र है, बहुरि करे वह ब्याह।
दुख पावे संसार में, डूबे समुद्र अथाह॥

चौ०-जब दूजी घरवाली आवे। प्रथम नारि के पुत्र न भावे॥
जो माता सम करे न प्रीति। रहे निपुत्री जग में भीति॥
बहुरि नरक में जाकर परे। बहुत प्रकार महादुःख परे॥

दो० फिर नारी अरु नर दोउ, पावें शूकर देह॥
भंगी की घर देह कौ, करे खेह से नेह॥

११४-हे अर्जुन! किसी तीर्थ यात्री को मार्ग में किसी स्त्री के यहाँ आतिथ्य स्वीकार करना उचित नहीं। इससे तीर्थ करने का फल प्राप्त नहीं होता।

११५-हे अर्जुन! जिस मनुष्य को बोलते समय मुख से थूक बाहर आवे और दूसरे पर पड़े तो यह

अच्छा लक्षण नहीं है। ऐसा मनुष्य समाज में उचित सम्मान न पाने के कारण दु:खी रहता है।

११६-हे पार्थ ! अपने स्वामी की अवज्ञा करना महा पाप है। लेकिन लोक व्यवहार में अनुचित मानी जाने वाली और बिना बिचारे शीघ्रता में अथवा काम, क्रोध, मद एवं लोभ के वशीभूत स्वामी द्वारा दी हुई आज्ञा को सुन कर ध्यान धरे तो पाप नहीं लगता।

११७-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने मित्र, स्वामी और गुरु से द्रोह करते हैं, वह निश्चय ही नरक भोगते हैं।

११८-हे पार्थ ! पशु पक्षियों और छोटे जानवरों को तथा बच्चों को उनके घोंसलों और रहने के स्थानों से न ही निकालना चाहिए। ऐसा मनुष्य अगले जन्म में दरिद्री होकर महा दुख पाता है। यदि किसी कारण ऐसा करना भी पड़े तो उनके लिए उचित व्यवस्था करने से पाप नहीं लगता।

११९-हे अर्जुन ! छोटे-छोटे बालकों को विशेष कर रात्रि के समय मार पीट कर सुलाना अच्छा

नहीं है। ऐसे मनुष्य सदैव दु:खी रहते हैं।

१२०-हे अर्जुन ! जो मनुष्य अपने हाथ पाँव के बीसौ नाखून को चौथे दिन नहीं काटते हों तो वह अनेक रोगों से ग्रसित होकर महा दु:ख पाते हैं।

१२१-हे अर्जुन ! जुआ खेलना महादोष है। ऐसा व्यक्ति धन का अभाव रहने के कारण सदा दु:ख पाता है।

१२२-हे अर्जुन ! जो मनुष्य इस ज्ञानमाला की समस्त शिक्षाओं पर ध्यान देगा और उसके अनुसार जीवन यापन करेगा, वह इस लोक तथा परलोक में सुख पावेगा।

(इति ज्ञानमाला सम्पूर्ण)